अमृता प्रीतम की कुछ कविताएं

**एक घटना**

तेरी यादें
बहुत दिन बीते
जलावतन हुईं
जीतीं हैं या मर गयीं-
कुछ पता नहीं

सिर्फ एक बार एक घटना हुई थी
ख्यालों की रात बड़ी गहरी थी
और इतनी स्तब्ध थी
कि पत्ता भी हिले
तो बरसों के कान चौंक जाते..

फिर तीन बार लगा
जैसे कोई छाती का द्वार खटखटाये
और दबे पांव छत पर चढ़ता कोई
और नाखूनों से पिछली दीवार को कुरेदता.....

तीन बार उठ कर
मैंने सांकल टटोली
अंधेरे को जैसे एक गर्भ पीड़ा थी
वह कभी कुछ कहता
और कभी चुप होता
ज्यों अपनी आवाज को दांतों में दबाता
फिर जीती जागती एक चीज
और जीती जागती आवाज
"मैं काले कोसों से आयी हूं
प्रहरियों की आंख से इस बदन को चुराती

धीमे से आती
पता है मुझे कि तेरा दिल आबाद है
पर कहीं वीरान सूनी कोई जगह मेरे लिये?"

"सूनापन तो बहुत है,
पर तूं जलावतन है, कोई जगह नहीं,
मैं ठीक कहती हूं कोई जगह नहीं तेरे लिये,
यह मेरे मस्तक,
मेरे आका का हुक्म है!"

और फिर जैसे सारा अंधेरा कांप जाता है
वह पीछे को लौटी
पर जाने से पहले कुछ पास आयी
और मेरे वजूद को एक बार छुआ
धीरे से
ऐसे, जैसे कोई वतन की मिट्टी को छूता है.....

**********

**एक मुलाकात**

मैं चुप शान्त और अडोल खड़ी थी
सिर्फ पास बहते समुन्द्र में तूफान था.....

फिर समुन्द्र को खुदा जाने
क्या ख्याल आया
उसने तूफान की एक पोटली सी बांधी
मेरे हाथों में थमाई
और हंस कर कुछ दूर हो गया

हैरान थी....
पर उसका चमत्कार ले लिया

पता था कि इस प्रकार की घटना
कभी सदियों में होती है.....

लाखों ख्याल आये
माथे में झिलमिलाये

पर खड़ी रह गयी कि उसको उठा कर
अब अपने शहर में कैसे जाऊंगी?

मेरे शहर की हर गली संकरी
मेरे शहर की हर छत नीची
मेरे शहर की हर दीवार चुगली

सोचा कि अगर तू कहीं मिले
तो समुन्द्र की तरह
इसे छाती पर रख कर
हम दो किनारों की तरह हंस सकते थे

और नीची छतों
और संकरी गलियों
के शहर में बस सकते थे....

पर सारी दोपहर तुझे ढूंढते बीती
और अपनी आग का मैंने
आप ही घूंट पिया

मैं अकेला किनारा
किनारे को गिरा दिया
और जब दिन ढलने को था
समुन्द्र का तूफान
समुन्द्र को लौटा दिया....

अब रात घिरने लगी तो तूं मिला है
तूं भी उदास, चुप, शान्त और अडोल

मैं भी उदास, चुप, शान्त और अडोल
सिर्फ- दूर बहते समुन्द्र में तूफान है.....

**********

**याद**

आज सूरज ने कुछ घबरा कर
रोशनी की एक खिड़की खोली
बादल की एक खिड़की बंद की
और अंधेरे की सीढियां उतर गया....

आसमान की भवों पर
जाने क्यों पसीना आ गया
सितारों के बटन खोल कर
उसने चांद का कुर्ता उतार दिया....

मैं दिल के एक कोने में बैठी हूं
तुम्हारी याद इस तरह आयी
जैसे गीली लकड़ी में से
गहरा और काला धूंआ उठता है....

साथ हजारों ख्याल आये
जैसे कोई सूखी लकड़ी
सुर्ख आग की आहें भरे,
दोनों लकड़ियां अभी बुझाई हैं

वर्ष कोयले की तरह बिखरे हुए
कुछ बुझ गये, कुछ बुझने से रह गये
वक्त का हाथ जब समेटने लगा
पोरों पर छाले पड़ गये....

तेरे इश्क के हाथ से छूट गयी
और जिन्दगी की हन्डिया टूट गयी
इतिहास का मेहमान
मेरे चौके से भूखा उठ गया....

**********

**हादसा**

बरसों की आरी हंस रही थी
घटनाओं के दांत नुकीले थे
अकस्मात एक पाया टूट गया
आसमान की चौकी पर से
शीशे का सूरज फिसल गया

आंखों में ककड़ छितरा गये
और नजर जख्मी हो गयी
कुछ दिखायी नहीं देता
दुनिया शायद अब भी बसती है

**********

**आत्ममिलन**

मेरी सेज हाजिर है
पर जूते और कमीज की तरह
तू अपना बदन भी उतार दे
उधर मूढ़े पर रख दे
कोई खास बात नहीं
बस अपने अपने देश का रिवाज है.....

**********

**शहर**

मेरा शहर एक लम्बी बहस की तरह है
सड़कें - बेतुकी दलीलों सी...
और गलियां इस तरह
जैसे एक बात को कोई इधर घसीटता
कोई उधर

हर मकान एक मुट्ठी सा भिंचा हुआ
दीवारें-किचकिचाती सी
और नालियां, ज्यों मूंह से झाग बहती है

यह बहस जाने सूरज से शुरू हुई थी
जो उसे देख कर यह और गरमाती
और हर द्वार के मूंह से
फिर साईकिलों और स्कूटरों के पहिये
गालियों की तरह निकलते
और घंटियां हार्न एक दूसरे पर झपटते

जो भी बच्चा इस शहर में जनमता
पूछता कि किस बात पर यह बहस हो रही?
फिर उसका प्रश्न ही एक बहस बनता
बहस से निकलता, बहस में मिलता...

शंख घंटों के सांस सूखते
रात आती, फिर टपकती और चली जाती

पर नींद में भी बहस खतम न होती
मेरा शहर एक लम्बी बहस की तरह है....

**********

**वारिस शाह नूं**

आज्ज आखां वारिस शाह नूं
कित्थे कबरां विचों बोल ते आज्ज किताबे ईश्क दा
कोई अगला वर्का फोल

इक रोई सी धी पंजाब दी तूं लिख लिख मारे वैण

आज्ज लखां धिया रोंदियां तैनूं वारिस शाह नूं कैण

उठ दर्दमंदा देया दर्दिया उठ तक्क अपना पंजाब

आज्ज वेले लाशा विछियां ते लहू दी भरी चिनाव

किसे ने पंजा पाणियां विच दित्ती जहर रला

ते उणा पाणियां धरत नूं दित्ता पानी ला

इस जरखेज जमीन दे लू लू फुटिया जहर

गिट्ठ गिट्ठ चड़ियां लालियां ते फुट फुट चड़िया कहर

उहो वलिसी वा फिर वण वण वगी जा

उहने हर इक बांस दी वंजली दित्ती नाग बना

नागां किल्ले लोक मूं, बस फिर डांग्ग ही डांग्ग,

पल्लो पल्ली पंजाब दे, नीले पै गये अंग,

गलेयों टुट्टे गीत फिर, त्रखलों टुट्टी तंद,

त्रिंझणों टुट्टियां सहेलियां, चरखरे घूकर बंद

सने सेज दे बेड़ियां, लुड्डन दित्तीयां रोड़,

सने डालियां पींग आज्ज, पिपलां दित्ती तोड़,

जित्थे वजदी सी फूक प्यार दी, ओ वंझली गयी गवाच,

रांझे दे सब वीर आज्ज भुल गये उसदी जाच्च

धरती ते लहू वसिया, कब्रां पइयां चोण,

प्रीत दिया शाहाजादियां अज्ज विच्च मजारां रोन,

आज्ज सब्बे कैदों* बन गये, हुस्न इश्क दे चोर

आज्ज कित्थों लाब्ब के लयाइये वारिस शाह इक होर

**वारिस शाह से**

आज वारिस शाह से कहती हूं
अपनी कब्र में से बोलो

और इश्क की किताब का

कोई नया वर्क खोलो

पंजाब की एक बेटी रोई थी

तूने एक लंबी दस्तांन लिखी

आज लाखों बेटियां रो रही हैं,

वारिस शाह तुम से कह रही हैं

ए दर्दमंदों के दोस्त

पंजाब की हालत देखो
चौपाल लाशों से अटा पड़ा हैं,

चिनाव लहू से भरी पड़ी है

किसी ने पांचों दरियाओं में

एक जहर मिला दिया है
और यही पानी

धरती को सींचने लगा है

इस जरखेज धरती से

जहर फूट निकला है

देखो, सुर्खी कहां तक आ पंहुंची

और कहर कहां तक आ पहुंचा

फिर जहरीली हवा वन जंगलों में चलने लगी
उसमें हर बांस की बांसुरी

जैसे एक नाग बना दी

नागों ने लोगों के होंठ डस लिये

और डंक बढ़ते चले गये

और देखते देखते पंजाब के

सारे अंग काले और नीले पड़ गये

हर गले से गीत टूट गया

हर चरखे का धागा छूट गया
सहेलियां एक दूसरे से छूट गयीं

चरखों की महफिल विरान हो गयी

मल्लाहों ने सारी कश्तियां

सेज के साथ ही बहा दीं
पीपलों ने सारी पेंगें

टहनियों के साथ तोड़ दीं

जहां प्यार के नगमे गूंजते थे

वह बांसुरी जाने कहां खो गयी

और रांझे के सब भाई

बांसुरी बजाना भूल गये
धरती पर लहू बरसा

कबरें टपकने लगीं

और प्रीत की शहजादियां

मजारों में रोने लगीं

आज सब कैदों* बन गये

हुस्न इश्क के चोर

मैं कहां से ढूंढ के लाऊं

एक वारिस शाह और..

(*कैदों हीर का चाचा था जो उसे जहर दे डालता है)

**********

**पहचान**

कई हजार चाबियां मेरे पास थीं
और एक-एक चाबी एक-एक दरवाजे को खोल देती थी
दरवाजे के अंदर किसी की बैठक भी होती थी
और मोटे पर्दे में लिपटा किसी का सोने का कमरा भी

और घरवालों के दुख
जो उनके ही होते थे, पर किसी समय मेरे भी होते थे
मेरी छाती की पीड़ा की तरह
पीड़ा, जो दिन के समय जागूं तो, जाग पड़ती थी,
और रात के समय सपनों में उतर जाती थी,
पर फिर भी
पैरों के आगे, रक्षा की रेखा जैसी, एक लक्ष्मण रेखा होती थी
और जिसकी बदौलत मैं जब चाहती थी
घरवालों के दुख घरवालों को देकर
उस रेखा से लौट जाती थी
और आते समय लोगों के आंसू लोगों को सौंप आती थी....
देख, जितनी कहानियां और उनके पात्र हैं !
उतनी ही चाबियां मेरे पास थीं
और जिनके पीछे
हजारों ही घर, जो मेरे नहीं, पर मेरे भी थे,
शायद वे कहीं अब भी हैं
पर आज एक चाबी का कौतुक
मैंने तेरे घर को खोला तो देखा
वह लक्ष्मण रेखा मेरे पैरों के आगे नहीं, पीछे है
और सामने तेरे सोने के कमरे में, तू नहीं, मैं हूं.....

**********

वह चांद से रूठी हुई एक रात थी
जब तारों के मस्तक में आग सरकती
तो उन्हें छाती से दूध देती
वह तारों को बदन से झटक देती